दुनिया की सबसे गन्दी राजनीति भारत की है जहाँ 10 वर्ष के बच्चे का पूरा टिकट लगता है किन्तु 17 वर्ष का बलात्कारी नाबालिग कहलाता है

"सच्ची खोज अच्छी खबर"

ज्ञान सरोवर

आंखे खोलिए
देश में जितना विरोध संघ और भाजपा का हो रहा है.. उतना विरोध रोहिंग्या, बांग्लादेशी घुसपैठियों का क्यों नहीं हो रहा

R.N.I.Reg.No.MAHHIN/2009/27377 (हिन्दी साप्ताहिक) डाक पंजीकरण संख्या- MH/MR/North East/237/2012-14

वर्ष : 16 अंक : 32 (प्रत्येक गुरूवार) मुम्बई, 22 अगस्त से 28 अगस्त, 2024 पृष्ठ : 8 मूल्य : 2.00 रूपये

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह 23 से 26 अगस्त तक अमेरिका की यात्रा करेंगे

नईदिल्ली। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शुक्रवार से अमेरिका की चार दिवसीय यात्रा शुरू करेंगे तथा इस दौरान दोनों देशों के बीच व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करेंगे। सिंह वाशिंगटन में अमेरिका के अपने समकक्ष लॉयड ऑस्टिन तथा राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवान समेत अन्य लोगों से बातचीत करेंगे। अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि सिंह की ऑस्टिन से बातचीत में 31 एमक्यू–9बी प्रीडेटर ड्रोन खरीदने की भारत की योजना, स्ट्राइकर इन्फैन्ट्री लड़ाकू वाहन का प्रस्तावित संयुक्त विनिर्माण और भारत में जीई एफ414 इंजन के सह–उत्पादन पर प्रमुखता से चर्चा होने की संभावना है। रक्षा मंत्रालय ने 23 से 26 अगस्त तक सिंह की अमेरिका यात्रा की घोषणा करते हुए कहा, ''इस यात्रा से भारत–अमेरिका व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी और गहरी तथा मजबूत होने की संभावना है।'' इसमें कहा गया है, ''यह यात्रा भारत–अमेरिका संबंधों में बढ़ती गतिशीलता और कई स्तरों पर रक्षा साझेदारियों की पृष्ठभूमि में हो रही है।'' सिंह मौजूदा और भविष्य की रक्षा साझेदारियों पर अमेरिकी रक्षा उद्योग के साथ उच्च स्तरीय गोलमेज वार्ता की भी अध्यक्षता करेंगे। वह इस दौरान भारतीय समुदाय के साथ भी बातचीत करेंगे।

विपक्ष के मजबूत होने के कारण सरकार को 'लेटरल एंट्री' भर्ती रद्द करनी पड़ी: मल्लिकार्जुन खरगे

मुंबई । कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि केंद्र सरकार को मजबूत विपक्ष के विरोध के कारण 'लेटरल एंट्री' के जरिये की जाने वाली भर्ती को रद्द करनी पड़ी। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती के अवसर पर मुंबई में आयोजित एक कार्यक्रम में खरगे ने दावा किया कि अगर नरेन्द्र मोदी सरकार के पास बहुमत होता तो वह आरक्षण लागू किए बिना ही सरकारी पदों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के लोगों को भर देती। कांग्रेस अध्यक्ष ने कहा, "हाल में उन्होंने लेटरल एंट्री से भर्ती की शुरुआत की। उन्होंने संयुक्त सचिव (रैंक के अधिकारियों) की नियुक्ति करने की कोशिश की.

..लेकिन मैंने सुना है कि लेटरल एंट्री भर्ती प्रक्रिया वापस ले ली गई है। ऐसा इसलिए क्योंकि विपक्ष मजबूत है।" संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने मंगलवार को केंद्र के अनुरोध पर नौकरशाही में 'लेटरल एंट्री' भर्ती के लिए जारी अपना नवीनतम विज्ञापन रद्द कर दिया। विपक्षी दलों द्वारा 'लेटरल एंट्री' भर्ती का विरोध किए जाने के बीच आयोग ने यह कदम उठाया है। यूपीएससी 'लेटरल एंट्री' के जरिए सीधे उन पदों पर उम्मीदवारों की नियुक्ति करता है, जिन पदों पर भारतीय प्रशासनिक सेवा (आईएएस) के अधिकारियों की तैनाती होती है। इसमें निजी क्षेत्रों से अलग–अलग क्षेत्र के विशेषज्ञों को विभिन्न मंत्रालयों व विभागों में सीधे संयुक्त सचिव और निदेशक व उप सचिव के पद पर नियुक्त किया जाता है।

लेटरल एंट्री को वापस लिए जाने पर बोले अश्विनी वैष्णव, सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध हैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, चिराग ने भी की तारीफ

नईदिल्ली। केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव ने मंगलवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संघ लोक सेवा आयोग में लेटरल एंट्री में आरक्षण सिद्धांतों को लागू करके बीआर अंबेडकर द्वारा तैयार संविधान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार सामाजिक न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की है, जिसके परिणामस्वरूप राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग (एनसीबीसी) को संवैधानिक दर्जा दिया गया है। अश्विनी वैष्णव ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में सरकार ने यह सुनिश्चित किया है कि **NEET**, सैनिक स्कूल और कई अन्य संस्थानों में प्रवेश के लिए आरक्षण के सिद्धांत लागू हों। वैष्णव ने एएनआई से कहा, पीएम मोदी ने सुनिश्चित किया कि बाबासाहेब अंबेडकर के पांच पवित्र स्थलों को उनका उचित दर्जा दिया जाए। हमें इस बात पर भी गर्व है कि भारत के राष्ट्रपति एक आदिवासी समुदाय से आते हैं। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी के संतृप्ति के सिद्धांतों के तहत, जिसका उद्देश्य हर कल्याणकारी कार्यक्रम को समाज के सबसे गरीब और सबसे हाशिए पर पड़े वर्गों तक पहुंचाना है, एससी, एसटी और ओबीसी समुदायों को सबसे अधिक लाभ मिला है। उन्होंने कहा कि 2014 से पहले कांग्रेस सरकार के फैसलों में आरक्षण के सिद्धांतों पर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। वित्त सचिवों को लेटरल एंट्री के माध्यम से नियुक्त किया गया था और आरक्षण के सिद्धांत को ध्यान में नहीं रखा गया था। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह और तत्कालीन योजना आयोग के उपाध्यक्ष मोंटेक सिंह अहलूवालिया लेटरल एंट्री रूट के माध्यम से सेवा में आए थे। केंद्रीय मंत्री ने दावा किया कि प्रधानमंत्री मोदी यूपीएससी के माध्यम से पार्श्व प्रवेश को पारदर्शिता लाने के साधन के रूप में देखते थे और आरक्षण के सिद्धांत को शामिल करके, यह अब स्पष्ट रूप से सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा कि लेटरल एंट्री का मामला संज्ञान में आने के बाद से ही मैं

विभिन्न विभागों से चर्चा कर रहा हूं। मैंने प्रधानमंत्री जी के सामने भी अपनी बात रखी है। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस सरकारें और गठबंधन में बनी विपक्षी सरकारों ने लैटरल एंट्री की है.. .विपक्ष यह माहौल बनाने की कोशिश कर रहा है कि यह पहली बार हो रहा है। उन्होंने कहा कि आज लेटरल एंट्री भर्ती का विज्ञापन रद्द कर दिया गया है। मैं और लोजपा (रामविलास) इसके लिए प्रधानमंत्री मोदी जी का आभार व्यक्त करते हैं...उन्होंने फिर से समाज का विश्वास जीता है।

बॉम्बे हाई कोर्ट ने त्योहारों पर लाउडस्पीकर–लेजर बीम के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने से इंकार किया

मुंबई। महाराष्ट्र की बॉम्बे हाई कोर्ट ने एक जनहित याचिका खारिज कर दी, जिसमें विभिन्न धार्मिक जुलूसों पर बजने वाले लाउडस्पीकर और लेजर बीम के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और न्यायमूर्ति अमित बोरकर की खंडपीठ ने याचिका को खारिज करते हुए कहा कि अन्य उपलब्ध उपायों के मद्देनजर जनहित याचिका खारिज की जाती है।पीठ ने 16 अगस्त को मामले की सुनवाई की थी। रिपोर्ट के मुताबिक, याचिकाकर्ता ने कोर्ट में तर्क दिया था कि त्योहारों में इस्तेमाल की जाने वाली खतरनाक लेजर किरणों के कारण कई लोगों की आंखों की रोशनी चली गई।साथ ही उन्होंने बताया कि तेज आवाज वाले डीजे सिस्टम और इसी तरह की गतिविधियों के कारण होने वाले ध्वनि प्रदूषण के कारण कई लोगों की सुनने भी प्रभावित हुई है।मामला अखिल भारतीय ग्राहक पंचायत और उनके संगठन की ओर से दायर किया गया था। धार्मिक जुलूस और विभिन्न त्योहारों के अलावा मस्जिद में नमाज के दौरान होने वाली अजान को लेकर लगभग हर राज्य में विवाद सामने आते रहे हैं।महाराष्ट्र में 2022 में इसको लेकर काफी विवाद हुआ था, जिसके बाद राज्य सरकार ने धार्मिक स्थलों पर लाउडस्पीकर लगाने के लिए अनुमति लेने को कहा था।उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ में भी इसको लेकर विवाद सामने आ चुका है। कई राज्यों में इसके लिए दिशानिर्देश जारी किए गए थे।

प्रत्येक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर तैनाती की माँग

वाराणसी। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ वाराणसी के वरिष्ठ शिक्षक नेता सनत कुमार सिंह ने बताया संघ के प्रदेश अध्यक्ष डॉ दिनेशचंद्र शर्मा एवं महामंत्री संजय सिंह ने माननीय शिक्षा मंत्री जी को पत्र लिखकर अवगत कराया है कि उ०प्र० बेसिक शिक्षा परिषदीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन की प्रक्रिया गतिमान है। सनत कुमार सिंह ने बताया कि संघ की मांग है कि समायोजन की प्रक्रिया में शिक्षकों से प्राप्त आपत्तियों के जैसे सरप्लस प्रधानाध्यापक का चिन्हांकन समायोजन की प्रक्रिया में ऐसे प्राथमिक विद्यालय जहाँ छात्र संख्या 151 से कम है, में कार्यरत प्रधानाध्यापक को सरप्लस के रूप में चिन्हांकन करते हुये समायोजित करने की प्रक्रिया गतिमान है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 जो कि उ०प्र० सरकार द्वारा वर्ष 2011 से लागू किया गया है, में प्राथमिक विद्यालय में 150 छात्र संख्या तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय में 100 छात्र संख्या होने पर ही प्रधानाध्यापक की तैनाती का नियम बनाया गया है जो कि पूर्णतः शिक्षा एवं शिक्षक हित में नहीं है, क्योंकि किसी भी संस्था के संचालन हेतु उसके प्रधान का होना आवश्यक है। इस नियम पर संघ के प्रांतीय पदाधिकारियों ने आरम्भ से ही आपत्ति दर्ज करायी है जिस पर समय–समय पर सरकारों द्वारा सहमति प्रदान की गयी है। वर्ष 2011 में जब शिक्षा का अधिकार अधिनियम उ०प्र० में लागू किया गया तब माननीया सुश्री मायावती जी के मुख्यमंत्रित्व वाली सरकार थी। संघ के प्रतिनिधि मण्डल ने तत्कालीन सचिव बेसिक शिक्षा उ०प्र० शासन से वार्ता की एवं अवगत कराया कि कोई भी विद्यालय प्रधानाध्यापक की अनुपस्थिति में संचालन किया जाना सम्भव नही है, क्योंकि कोई भी सहायक अध्यापक प्रधानाध्यापक पद के अतिरिक्त उत्तरदायित्व का प्रभार स्वीकार नही करेगा। तत्कालीन सचिव उ०प्र० शासन ने संघ के उपरोक्त अनुरोध को स्वीकार किया तथा प्रदेश में किसी भी प्रधानाध्यापक का समायोजन नही किया गया। वर्ष 2012 से 2017 तक उत्तर प्रदेश में माननीय श्री अखिलेश यादव जी के नेतृत्व वाली सरकार थी। उत्तर प्रदेशीय प्राथमिक शिक्षक संघ के प्रतिनिधि मण्डल ने तत्कालीन माननीय बेसिक शिक्षा मंत्री श्री रामगोविन्द चौधरी जी से प्रत्येक विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर तैनाती की माँग की। माननीय श्री

रामगोविन्द चौधरी जी ने संघ के अनुरोध से सहमत होते हुये व स्वीकार किया कि कोई भी विद्यालय प्रधानाध्यापक की तैनाती के बिना सुचारू रूप से संचालित नही हो सकता। वर्तमान समय में आवश्यकता वाले विद्यालयों की संख्या सरप्लस शिक्षकों की संख्या के सापेक्ष प्रकाशित की जा रही है जबकि जनपद में आवश्यकता वाले विद्यालयों की संख्या अधिक है। संघ की मांग है कि जनपद में आवश्यकता वाले समस्त विद्यालयों की सूची प्रकाशित किया जाये एवं शिक्षकों से प्राप्त आपत्तियों के निस्तारण के उपरांत ही समायोजन प्रक्रिया लागू किया जाये। ऐसा न किये जाने से शिक्षकों में काफी आक्रोश है।

1990 में लंदन में संस्था के ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस तथा आबू पर्वत में ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया

1990 में लंदन में संस्था के ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस तथा आबू पर्वत में ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया। दादी जी यूरोप व दक्षिण–पूर्व एशिया के दौरे पर गई जहाँ उन्होंने अनेक कार्यक्रमों को सम्बोधित किया।1991 में दादी जी रशिया के दौरे पर गई। दादी जी को मुम्बई के प्रियदर्शनी एकेडमी द्वारा प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर द्वारा दादी जी को डाक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया।येल्लापुर में हाईस्कूल की टीचर्स के लिए टीचर ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन किया गया।1992 में इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन यूनिवर्सल हार्मनी का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिह राव ने किया। युवा सद्भावना सायकल यात्रा का आयोजन भारत के 8 स्थानों से किया गया। दादी जी के नेतृत्व में 1994 में स्वास्थ्य मेलों का आयोजन पूरे भारत में किया गया। 1996 में दिल्ली से जमशेदपुर व दिल्ली से हैदराबाद तक नशामुक्ति अभियान निकाले गए। 1999 से 2000 में भारत के 24 मुख्य शहरों से 24 ज्योतिर्लिंगम रथयात्राएं निकाली गईं। सभी रथयात्राओं का अंतिम पड़ाव आबू पर्वत था। इसका भव्य समापन आबू पर्वत में किया गया।1999 में इंटरनेशनल ईयर फॉर द कल्वर ऑफ पीस – मेनिफेस्टो 2000श कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरे भारत से 3 करोड़ लोगों से फार्म भरवाए गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने भी अपने फार्म भरकर इस अभियान में योगदान दिया।सन् 2000 में पूरे भारत में विश्व बंधुत्व व सद्भावना की भावना को लेकर मेगा प्रोग्राम आयोजित किए गए। 2001 से 2003 में युवा एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संस्था के युवा प्रभाग ने भारत की सात राजधानियों में युवा महोत्सव आयोजित किए।2004 में श्लीविंग स्प्रिच्युअलिटी फॉर ए वैल्यू बेस्ड सोसायटी अभियान के अन्तर्गत पूरे भारत में कार्यक्रम आयोजित किए गए।2005 – 06 में तो श्शांति एवं शुभ भावना अभियान चलाया गया। श्वर्ल्ड पीस फेस्टिवलश का आयोजन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2006 तक किया गया।2006 – 07 में दादी जी के कुशल मार्गदर्शन में श्दिव्यता, आशा एवं खुशीश कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के हर शहर में कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत के जगद्गुरु, महामण्डलेश्वरों तथा संतजनों के लिए श्आध्यात्मिक कार्यक्रमश का आयोजन किया गया। पर्यावरण संकट पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

1922 से सतत प्रवाहित दादी जी की यह यात्रा अंततोगत्वा 25 अगस्त 2007 को अपने पार्थिव देह के त्याग के साथ ही थम गई।प्रत्येक वर्ष इस दिन को ब्रह्माकुमारिज़ इंटरनेशनल हाफ मैराथन के माध्यम से विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाती है। निःसंदेह! ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो चले जाने के बाद भी दूसरों को प्रेरित करते रहते हैं।हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि ऐसे ही अमूल्य रत्नों में से एक हैं जो अपनी यादों के माध्यम से सदैव अमर रहेंगी।

ज्ञान की मणि बन सारे जग को किया प्रकाशित

(ब्रह्माकुमारीज की पूर्व मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि की 35 वीं पुण्यतिथि पर विशेष (अव्यक्त आरोहणः 25 अगस्त 2024)

आमंत्रण, आबू रोड, राजस्थान। दादी प्रकाशमणि नारी शक्ति का वह प्रदीप्तमान सितारा जिनके ज्ञान के प्रकाश की रोशनी आज भी अध्यात्म के पथिकों की राह प्रशस्त कर ही है। आपके हृदय की गहराई और विशालता कितनी महान रही होगी जो हर किसी को अनुभव और एहसास होता था मेरी दादी मां। जहां एक ओर परिवारों में दो–चार लोगों को संतुष्ट कर पाना संभव नहीं होता है, वहीं दादी के अथाह प्यार, पालना, अपनापन और उदारता की महानता ही है कि हजारों ब्रह्माकुमारी बहनों की संरक्षक, मार्गदर्शक बनकर सदा आगे बढ़ती गईं और ब्रह्माकुमारीज को विश्व क्षितिज पर स्थापित कर दिया। करुणा, सद्भावना और दया का सागर दादी मां का हृदय वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से भरपूर था। कुमारों की प्रेरक बनने से आपको प्यार से कुमारका दादी भी कहते थे। जिस विश्वास, आशा और उम्मीद के साथ ब्रह्मा बाबा ने दादी को 1969 में इस ईश्वरीय परिवार की कमान सौंपी थी दादी ने उससे हजार गुना उम्मीद पर खरा उतरते हुए परमात्म के दिव्य कार्य को न केवल आगे बढ़ाया, बल्कि लाखों ब्रह्माकुमार भाई–बहनों के हृदय में निश्चल स्नेह–प्यार की मूरत बनकर सदा–सदा के लिए बस गई। आपका जीवन नारी के शक्ति स्वरूप की जीती जागती मिसाल था। आपने दिव्य कर्म और विराट सोच से यह साबित कर दिखाया है कि यदि लक्ष्य पवित्र, महान और परमात्म साथ हो तो कुछ भी असंभव नहीं है। इतने महान लक्ष्य दो–पांच वर्षों में हासिल नहीं किए जा सकते हैं। योग–तपस्या के पथ पर चलते हुए आपने न केवल अपना जीवन तपस्यामय बनाया बल्कि हजारों लोगों के लिए आदर्शमूर्त, उदाहरणमूर्त बनकर दिलों में ऐसी अमिट छाप छोड़ी जिसे मिटा पाना कभी संभव नहीं है।

आपके जीवन की शिक्षाएं जो आज भी ब्रह्मा वत्सों का मार्ग प्रशस्त करती हैं–

जब व्यक्ति जीवन में कुछ अर्जित कर लेता है, किसी मुकाम पर पहुँच जाता प्रसिद्धि पा लेता है और किसी भी रूप में शक्तिशाली हो जाता है तो उसे ज्ञान, पैसे, शरीर का नाम का अहं भाव प्रकट होने लगता है। लेकिन दादी प्रकाशमणि हजारों बहनों की नायिका और इतने बड़े अंतरराष्ट्रीय संगठन की मुखिया होने के बाद भी जीवन में कभी अहं भाव छू तक नहीं सका। दादी सदा कहती थी– मैं तो निमित्त मात्र हूं। करन–करावनहार परमात्मा पिता करा रहा है। मैं खुद को हैड मानती ही नहीं. हैड मानने से हेडक होती है।

मिर्माण भावः निर्माणता, महानता की निशानी है। जीवन में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी, पद होते दूर चीजों को साक्षी भाव से देखना, विशाल व्यक्तित्व की पहचान है। खुद को पीछे रखकर सरों को आगे बढ़ाना, हिम्मत और उत्साह बढ़ाना दादी की खासियत थी।

मेल वाणीः वाणी मनुष्य का आभूषण होती है। निर्मल वाणी की धनी दादी के बोल लाखों लोगों में उमंग उत्साह और नई ऊर्जा का संचार कर देते थे। दादी की एक आवाज पर लाखो लोग चल पड़ते थे। जीवन पर्यंत ब्रह्माकुमारीज की मुखिया होने के वाबजूद आपके मुख से कभी कटु, कठोर और कड़वे वचन नहीं निकले। सदा सभी के प्रति शुभभावना, शुभकामनाद्यऔर प्रेम के बोल ही निकलते थे।

पवित्रताः पवित्रता ही महानता का आधार है। पवित्र आत्माएं प्रभु को प्रिय हैं। मन वचन कर्म में संपूर्ण पवित्रता से ओतप्रोत दादी माँ सबके के लिए नजीर थीं। आपका आभामंडल इतना पावरफुल था कि संपर्क में आने वाले लोगों को पवित्रता की तरंगे महसूस होती थीं।

दरः इतना बड़ा ईश्वरीय कारोबार संभालते हुए भी सादगी आपके जीवन का श्रृंगार रहा।आपका जीवन सादा खानपान, सादा रहन–सहन से युक्त रहा। सादगी की मूरत दादी हर किसी के दिल को जीत लेती थीं।

होरिमक प्यारः छोटा हो या बड़ा, गरीब हो या अमीर दादी के हृदय में सभी के लिए समान प्यार और अपनेपन का भाव रहता था। उन्होंने कभी भी छोटे–बड़ों में भेद नहीं किया। हर एक भाई–बहन को अपनेपन का एहसास कराया। उन्हें आत्मिक प्यार दिया, यही कारण है कि आप सबकी चहेती दादी मां बन गईं।

अष्टताः हमें जीवन में जो मिला है उसमें खुद संतुष्ट रहना और दूसरों को संतुष्ट करना यह आपके जीवन में विशेष गुण रहा। किसी समस्या, परेशानी को लेकर जब भी कोई भाई– बहन दादी के पास जाता तो वह उनका समाधान देकर हर एक को संतुष्ट कर देती थी। दादी से मिलने के बाद किसी के मन में कोई समस्या नहीं रह जाती थी।

स्वामानः परमात्म की शिक्षा है–सदा स्वमान में रहना और सर्व को सम्मान देना। स्वमान में रहेंगे तो सर्व का मान मिलेगा। सदा आत्मिक स्वमान में रहकर निरंतर परमात्मा को याद करना आपकी दिनचर्या में शामिल था।

सर्व को सम्मानः ईश्वरीय परिवार में सैकड़ों भाई–बहनों के अनुभव है कि कैसे दादी का व्यवहार सदा सर्व के प्रति सम्मान का रहा। कैसे उन्होंने सभी को सम्मान दिया। दूसरों को सम्मान देंगे तो हमें सम्मान मिलेगा। यह महावाक्य दादी के जीवन में यथार्थ रूप में चरितार्थ होता था। ऐसे दिव्य गुणों, विशेषताओं से संपन्न थीं हमारी दादी मां।

ब्रह्माकुमारी बीके मनजीत दीदी... कैबिनेट मिनिस्टर श्री गजेंद्र शेखावत व सुभाष शर्मा जी को सम्मानित करते हुए... नवाशहर, पंजाब

सम्पादकीय...

विदेशों में भारतीय राजनयिकों की मांग

पिछले दिन मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने एक वक्तव्य में कहा है कि अब भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री मोदी जी की विश्व छवि के कारण विदेशी देशों में भी भारतीयों की मांग बढ़ गई है कि वे वहां के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री बनें । यूं भारत मूल के लोग बहुत से देशों में शीर्ष पदों पर हैं –– सिंगापुर, आयरलैण्ड, मॉरीशस, क्यूगयाना, दक्षिण–अफ्रीका, इंग्लैण्ड, फीजी, साउथ गुयाना आदि आदि । इंग्लैण्ड के अभी तक के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक हिन्दू हैं । वहां दस डाउनिंग स्ट्रीट में राजकीय स्तर पर दिवाली मनाई गई । यूं उनके माता–पिता भारतीय हैं और उन्होंने एक बहुत अमीर भारतीय महिला से शादी की है । वे पूरी तरह से ब्रिटिश हैं खैर अब तो प्रधानमंत्री भी नहीं हैं । ऋषि सुनक कंजरवेटिव पार्टी से प्रधानमंत्री थे । चर्चिल भी उसी पार्टी के थे । अमेरिका में नवम्बर में राष्ट्रपति का चुनाव वहां डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर से कमला हैरिस उम्मीदवार हैं । यूं उनके नाम का एक हिस्सा भारतीय है । उनके माता–पिता किसी अफ्रीकी देश से थे । कमला हैरिस पूरी तरह से अमरीकी हैं । उनके पति अमरीका के एक बड़े रईस हैं । वे यहूदी हैं । अमरीका में लगभग सारे यहूदी बहुत अमीर हैं वे इजराइल की आर्थिक मदद करते हैं । कमला हैरिस को प्रभावशाली सात राज्यों में बढ़त है जबकि रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप की केवल दो राज्यों में बढ़त है । बाइडेन को डेमोक्रेटिक पार्टी से केवल 35त्न समर्थन था, परन्तु कमला हैरिस को उनकी पार्टी के 80त्न का समर्थन है । जानकारों के अनुसार 19 अगस्त को होने वाले डेमोक्रेटिक अधिवेशन में कमला हैरिस को पहले से ही 3900 डेलिगेट्स का समर्थन मिल चुका है । अटलांटा में पिछले दिन कमला हैरिस ने बेहद जोशीला भाषण दिया था । कमला हैरिस को एंटीजोना, मिरीगन, नेवादा, विस्कोन्सिन, नॉर्थ कैरोलिना, पेंन्सिनवेनिया और कर्जिया में बहुत तगड़ा समर्थन? है । डोनाल्ड ट्रंप कमला हैरिस के पारिवारिक पृष्ठभूमि पर टिप्पणी करते हैं जिसे अमेरीकी पसंद नहीं करते । ट्रंप के अनुसार कमला हैरिस के पति यहूदी होकर भी यहूदियों का विरोध करते हैं । कमला हैरिस ने हाल में इजराइल को सलाह दी थी कि वह हमास से युद्ध बन्द करे । अमरीकी यहूदी कमला हैरिस के इस बयान से नाखुश हैं । असल में मोदी जी की विश्व लोकप्रियता निर्विवाद सत्य है । आज में सबसे बड़े विश्व नेता हैं । मोदी जी पूरी तरह से भारतीय हैं और भारत को विश्व गुरु बनाना ही उनकी प्राथमिकता है ।

सबालेंका ने जीता सिनसिनाटी ओपन खिताब

सिनसिनाटी (यूएसए), 20 अगस्त। आर्यना सबालेंका ने सिनसिनाटी ओपन के फाइनल में जेसिका पेगुला को हराकर जनवरी के ऑस्ट्रेलियन ओपन के बाद अपना पहला खिताब हासिल किया। बेलारूसी खिलाड़ी ने अपना प्रभावी प्रदर्शन करते हुए केवल 76 मिनट में 6–3, 7–5 से जीत हासिल की, जो उनके करियर का 15वां खिताब और डब्ल्यूटीए 1,000 स्तर पर उनका छठा खिताब है। इस जीत से अमेरिकी पेगुला की नौ मैचों की जीत का सिलसिला समाप्त हो गया, जिसने हाल ही में अपने कनाडाई ओपन खिताब का बचाव किया था। सबालेंका, जो जल्द ही दुनिया की नई नंबर दो खिलाड़ी बन जाएंगी, ने मैच पर जल्दी ही नियंत्रण कर लिया, चौथे गेम में पेगुला की सर्विस तोड़ दी और पहला सेट अपने नाम कर लिया। दूसरे सेट में 26 वर्षीय खिलाड़ी को कुछ देर के लिए लड़खड़ाना पड़ा, जब पेगुला ने वापसी की, जबकि सबालेंका 5–4 पर खिताब के लिए सर्विस कर रही थी। हालाँकि, सबालेंका ने तुरंत अपना संयम वापस पा लिया, पेगुला की सर्विस को फिर से तोड़ दिया और आत्मविश्वास से मैच जीत लिया। यह जीत सबालेंका की दुनिया की नंबर एक इगा स्वीयाटेक पर प्रभावशाली सेमीफाइनल जीत के बाद हुई, जिसने 26 अगस्त से शुरू होने वाले आगामी यूएस ओपन के लिए उनकी तैयारी को प्रदर्शित किया।

सस्ती एवं नकारात्मक राजनीति है लेटरल एंट्री का विरोध

भारतीय नौकरशाही संरचना के प्रभावी एवं परिणामकारी प्रदर्शन को निश्चित रूप से लेटरल एंट्री प्रक्रिया के साथ पूरक किया जा सकता है। लेटरल एंट्री नई बाहरी प्रतिभाओं को लाकर, सरकारी अधिकारियों को सार्वजनिक कल्याण के लिए और अधिक काम एवं प्रभावी काम करने के लिए प्रेरित करके नियमित सरकारी अधिकारियों को पूरक कर सकते हैं, लेकिन लेटरल एंट्री की प्रणाली को अधिक समावेशी, पारदर्शी और असरदार बनाने के लिए एक निश्चित नीति के साथ आगे बढ़ने एवं इस महत्वपूर्ण मुद्दे पर सकारात्मक रवैया अपनाना देश विकास के लिये जरूरी प्रतीत होता है। इसके लिये वर्तमान नरेन्द्र मोदी सरकार ने जो कदम उठाया है, उस पर राजनीति करने करने की बजाय उसमें देशहित को सामने रखा जाना चाहिए। वैश्वीकरण ने शासन के काम को अत्यंत जटिल बना दिया है और यही वजह है कि इस क्षेत्र में विशेषज्ञता और कौशल की मांग पहले से बहुत अधिक बढ़ गई है। अर्थव्यवस्था और अवसंरचना जैसे क्षेत्रों में थिंक–टैंकों की आवश्यकता के मद्देनजर तथा अन्य ऐसे विभागों में जहाँ विशिष्ट प्रकार की सेवाओं की आवश्यकता होती है, लेटरल एंट्री से संयुक्त सचिवों की नियुक्ति की जानी प्रांसगिक एवं उपयोगी कदम है। संघ लोक सेवा आयोग ने केंद्र सरकार के 24 मंत्रालयों में संयुक्त सचिव, निदेशक और उप सचिव की भूमिकाओं के लिए प्रतिभाशाली, कार्यक्षम और दक्ष भारतीय नागरिकों से 45 पदों के लिए आवेदन आमंत्रित करके सिविल सेवाओं में लेटरल एंट्री (सीधी भर्ती) का स्वागतयोग्य एवं सराहनीय प्रयोग कर रहा है। भले ही इस मुद्दे को लेकर विभिन्न राजनीतिक दलों में विरोध के स्वर देखने को मिल रहे हैं। वैसे भी ऐसे राजनीतिक लोगों एवं दलों की आंखों में किरणें आंज दी जाये तो भी वे यथार्थ को नहीं देख सकते। क्योंकि उन्हें उजाले के नाम से एलर्जी है। विपक्षी दलों विशेषतः कांग्रेस ने एससी, एसटी और ओबीसी उम्मीदवारों के आरक्षण की उपेक्षा के लिए सिविल सेवाओं में लेटरल एंट्री नीति की आलोचना की है। जबकि भारत में सिविल सेवाओं में लेटरल एंट्री का तात्पर्य सरकार के मध्य और वरिष्ठ प्रबंधन स्तर पर पेशेवरों एवं प्रतिभाशाली कर्मियों की भर्ती से है। जिसमें प्रतिभाशाली एससी, एसटी और ओबीसी उम्मीदवार भी आवेदन कर सकते हैं। इस पहल का उद्देश्य विशिष्ट कौशल और विशेषज्ञता लाना है जो पारंपरिक नौकरशाही ढांचे में उतनी प्रभावी प्रतीत नहीं हो रही है। कई संभावित और अच्छे प्रशासक हैं जो अपनी कम उम्र के दौरान सरकार द्वारा आयोजित परीक्षाओं में भाग नहीं लेते हैं। लेटरल एंट्री उन्हें शासन तंत्र का हिस्सा बनने और राष्ट्र निर्माण में योगदान करने का अवसर प्रदान करता है। नया भारत, सशक्त भारत, विकसित भारत निर्मित करने में इन प्रतिभाओं का उपयोग होना राष्ट्र में एक नयी रोशनी का अवतरण हो सकता है। देखा यह गया है कि जब भी ब्यूरोक्रेसी में सुधार की चर्चा होती है, तो इसका विरोध होने लगता है, जो विरोधाभासी एवं विडम्बनापूर्ण होने के साथ–साथ संकीर्ण राजनीति का द्योतक हैं। कांग्रेस और कुछ अन्य दलों की ओर से जिस तरह लेटरल एंट्री पर आपत्ति जताई जा रही है, वह यही बताती है कि नकारात्मक राजनीति की जा रही है। यह आश्चर्जनक है कि ऐसे देश–विकास एवं राष्ट्र–निर्माण के निर्णयों एवं मुद्दों का विरोध करने की राजनीति की कमान राहुल गांधी अपने हाथ में लेते हुए दिख रहे हैं। कम से कम उन्हें तो इससे बचना चाहिए, क्योंकि राहुल गांधी को यह नहीं भूलना चाहिए कि वित्त सचिव के रूप में मनमोहन सिंह की नियुक्ति लेटरल एंट्री ही थी और वह भी बिना किसी निर्धारित प्रक्रिया के। भारत में लेटरल एंट्री कोई नई बात नहीं है। पहले भी भारत में इसका फायदा उठाया जा चुका है। मुख्य आर्थिक सलाहकार की नियुक्ति लेटरल एंट्री से ही की जाती रही है। पूर्व आर्थिक सलाहकार मोंटेक सिंह अहलूवालिया, आधार की नींव रखने वाले नंदन नीलेकणि जैसी बड़ी हस्तियां इसी के जरिए प्रशासन में शामिल हुईं। यह व्यवस्था तदर्थ आधार पर की गई है, यह संस्थागत नहीं है। लेटरल एंट्री की व्यवस्था सिर्फ भारत में ही है। ब्रिटेन, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, नीदरलैंड और बेल्जियम जैसे पश्चिमी देशों में पहले से ही सभी क्षेत्रों के योग्य कर्मियों के लिए विशिष्ट सरकारी पदों को खोल दिया है। यह नौकरी के लिए बेहतरीन प्रतिभाओं को आकर्षित करने का एक बेहतर तरीका पाया गया है। स्पष्ट है कि कांग्रेस एक बार फिर अपने शासन के समय सुधार की दिशा में उठाए गए कदम का विरोध कर रही है। इसके विपरीत वर्तमान सरकार एक तय प्रक्रिया के तहत लेटरल एंट्री कर रही है। इसी कारण इसकी जिम्मेदारी संघ लोक सेवा आयोग को दी गई है। कांग्रेस एवं विपक्षी दलों को यह भी पता होना चाहिए कि लेटरल एंट्री के जरिये जो नियुक्तियां की जा रही हैं, वे अस्थायी हैं। ये नियुक्तियां केवल तीन वर्ष के लिए हैं और उनमें अधिकतम दो वर्ष की वृद्धि की जा सकती है। प्रशासन में सुधार की हर पहल को आरक्षण से जोड़ना केवल यही नहीं बताता कि वोट बैंक की सस्ती राजनीति अनियंत्रित हो रही है, बल्कि यह भी इंगित करता है कि आरक्षण को हर मर्ज की दवा मान लिया गया है। यह ठीक नहीं कि होनी को अनहोनी बनाने का प्रयत्न हो। वैसे लेटरल एंट्री राष्ट्रहित का मुद्दा है। जिस पर 2002 की संविधान समीक्षा आयोग ने भी सिफ़ारिश वकालत की। मनमोहन सिंह के समय 2005 की द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग ने केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर लेटरल एंट्री के लिए एक संस्थागत और पारदर्शी प्रक्रिया की सिफारिश की। स्पष्ट है कि कांग्रेस एक बार फिर अपने शासन के समय सुधार की दिशा में उठाए गए कदम का विरोध कर रही है। नीति आयोग ने अपने तीन–वर्षीय कार्य एजेंडा में लेटरल एंट्री के विचार का समर्थन किया। इसमें इस बात पर जोर दिया गया कि लेटरल एंट्री से विशेष ज्ञान और प्रशासनिक कौशल को शामिल करके शासन में सुधार की क्षमता को विकसित किया जा सकता है। शासन में सचिवों का क्षेत्रीय समूह ने भी लेटरल एंट्री प्रणाली का समर्थन किया। यह तर्क दिया गया कि लेटरल एंट्री प्रासंगिक विशेषज्ञता वाले पेशेवरों को पेश करके सार्वजनिक सेवाओं की प्रभावशीलता को बढ़ाया सकता है और उसे उच्च परिणामकारी बनाया जा सकता है। विरोध के लिये विरोध करने की सोच एवं उद्देश्यहीन, उच्छृंखल, विध्वंसात्मक नीति के द्वारा किसी का भी हित सधता हो, ऐसा प्रतीत नहीं होती। राहुल गांधी और कुछ अन्य विपक्षी नेताओं की ओर से यह जो माहौल बनाया जा रहा है कि लेटरल एंट्री के जरिये विभिन्न मंत्रालयों में विशेषज्ञों की नियुक्तियों से आरक्षित वर्गों के हितों को नुकसान होगा, उसका इसलिए कोई औचित्य नहीं, क्योंकि यह कहीं नहीं कहा गया है कि इन वर्गों के लोग आवेदन नहीं कर सकते। राहुल गांधी किस तरह अपने संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थ को पूरा करने के लिए एक झूठा विमर्श खड़ा रहे हैं, इसका पता इससे भी चलता है कि 2019 के लोकसभा चुनाव के समय स्वयं उन्होंने पूर्व सैन्य अधिकारियों को लेटरल एंट्री के जरिये सिविल सेवाओं में शामिल करने का वादा किया था।

स्वयं में प्रकाश पूँज थी राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि

अमित शिवकुमार दुबे, कार्यकारी संपादक
ज्ञान सरोवर

महाराष्ट्र। दादी प्रकाशमणि का प्रारंभिक नाम रमा था। इनका

जन्म सिंध (पाकिस्तान) में 01 सितंबर 1922 को हुआ था।इनके पिता श्री विष्णु के बड़े उपासक और भक्त थे। इनका भी श्री कृष्णा के प्रति प्रेम और भक्ति भाव रहता था।मात्र 15 वर्ष की आयु में यह पहली बार ओम मंडली के संपर्क में आई थीं,जिसकी स्थापना 1936 में की गयी थी।इन्हें ओम मंडली में आने से पहले ही घर बैठे श्री कृष्ण का साक्षात्कार हुआ था,जहाँ शिव बाबा का ज्योति स्वरूप भी दिखा था।

ओम मंडली आध्यात्मिक सभा का गठन दादा लेखराज (जिन्हे अब ब्रह्मा बाबा के नाम से जाना जाता है) द्वारा किया गया था, जो भगवान (शिव बाबा) द्वारा दिए गए निर्देशों पर आधारित थे।दादी प्रकाशमणि के शब्दों में,श्पहले दिन ही जब मे बापदादा से मिली और दृष्टि ली तो एक अलग ही दिव्य अनुभव हुआ।"उन्होंने एक विशाल शाही बगीचे में श्री कृष्ण का दृश्य देखा।सन् 1922 से लेकर 2007 तक की दादी प्रकाशमणि जी की आध्यात्मिक यात्रा अलौकिक रही।अपना पूरा जीवन सिर्फ़ और सिर्फ़ आध्यात्म को समर्पित किया और इसी के माध्यम से जीवन पर्यंत मानव सेवा में लगी रही।

सन् 1922 में ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना के साथ ही दादी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन ईश्वरीय सेवार्थ समर्पित कर दिया।

त्याग तपस्या व आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा जीवन को मूल्यनिष्ठ बनाया।स्वयं सर्वशक्तिवान परमात्मा के सान्निध्य में राजयोग की गहन साधना कर आत्मिक बल अर्जित किया–साथ ही संस्था के बोर्डिंग स्कूल में बच्चों को पढ़ाने की सेवा की।

सन् 1950 में ब्रह्माकुमारी संस्था का प्रतिनिधि मंडल दादी जी के नेतृत्व में श्द्वितीय विश्व धर्मसभाश में भाग लेने जापान गया। छः मास के इस प्रवास के दौरान हांगकांग, सिंगापुर, इंडोनेशिया इत्यादि देशों में जाकर वहाँ के लोगों को आध्यात्मिक ज्ञान व राजयोग मेडीटेशन का प्रशिक्षण दिया।दादी जी यहीं नहीं रूकी।भारत के विभिन्न राज्यों में आध्यात्मिक ज्ञान का प्रचार किया तथा दिल्ली, पटना, कोलकाता और मुम्बई में नये सेवा केंद्र खोले।सन् 1956 में मुम्बई के ब्रह्माकुमारीज़ सेवा केंद्रों की निदेशिका बनीं। लगभग 100 से भी अधिक कॉन्फ्रेंसेस, आध्यात्मिक प्रदर्शनियां व मेले आयोजित किए।

सन् 1956 – 61 में महाराष्ट्र जोन की निदेशिका बन ईश्वरीय सेवाओं में वृद्धि की।सन् 1964 में महाराष्ट्र, गुजरात एवं कर्नाटक जोन की निदेशिका के रूप में सेवाएं दीं।सन् 1965–68 में संस्था की मुख्य प्रशासिका नियुक्त हुई।दीदी ने

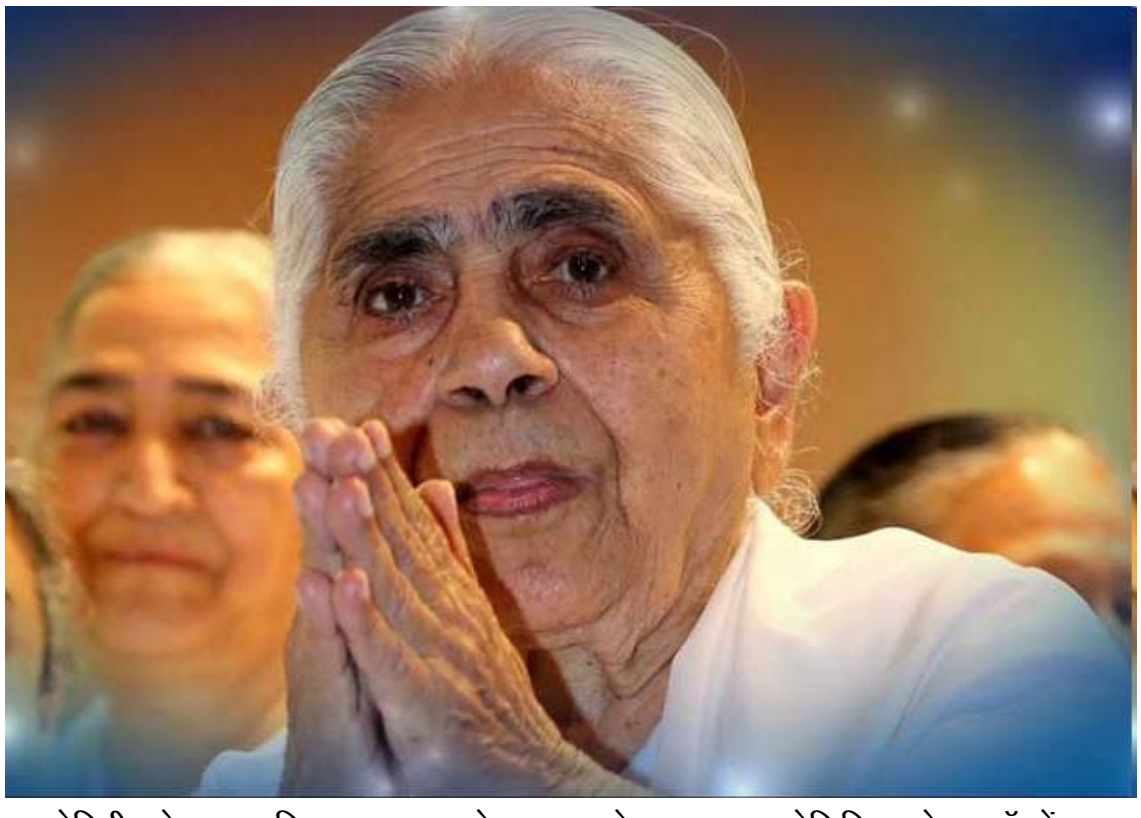

मनमोहिनी के साथ मिलकर मुख्य प्रशासिका के रूप में संस्था का नेतृत्व किया।सन् 1969 तक भारत के विभिन्न राज्यों में 50 से अधिक कॉन्फ्रेंसेस का आयोजन दादी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।1969 – 84 में फिर संस्था की सेवाओं का विदेशों में विस्तार हुआ।दादी जी छः सदस्यों के प्रतिनिधि मंडल के साथ विदेश सेवा पर गई और विभिन्न देशों में सेवाकेंद्रों की स्थापना की।

सन् 1972 में दिल्ली के रामलीला मैदान में भव्य विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया।जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने मेले का अवलोकन किया और इससे लाभ लिया।सन् 1973 में विश्व के पांचों महाद्वीपों में श्पवित्रता के द्वारा विश्व शांति की आशाश कार्यक्रम द्वारा विश्व के राजनीतिज्ञों, धर्म नेताओं तथा अनेक संस्था के प्रमुखों को परमात्म संदेश प्रदान किया गया।1977 में 'वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन फ्यूचर मेनकाइंडश का आयोजन दिल्ली में हुआ जिसका उद्घाटन भारत के उपराष्ट्रपतिबी. डी. जत्ती ने किया।अगले ही साल 1978 मेंश्वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस ऑन ह्यूमन सरवाइवलश का आयोजन बैंगलोर विधानसभा के बेन्केट हॉल में किया गया।

1980 में संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ में गैर सरकारी संस्था के रूप में शामिल किया गया।इसी वर्ष श्द ओरिजन ऑफ पीसश कॉन्फ्रेंस का आयोजन नैरोबी में किया गया।फिर तो दादी जी के कुशल नेतृत्व में संस्था उत्तरोत्तर वृद्धि करती गयी।1981 में ही संस्था की भंगिनी संस्था के रूप में श्राजयोगा एज्युकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशनश की स्थापना की गई।सन् 1982 से लेकर 2007 तक का समय स्वर्णिम काल रहा।एक ओर जहाँ प्रथम श्यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंसश का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन धर्मगुरू दलाई लामा ने किया।वहीं दूसरी ओर अमेरिका, ब्रिटेन और यूरोप सहित 13 देशों में दादी जी ने दौरा किया और अनेक अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंसेस को सम्बोधित किया। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पीस मेडल से संस्था को सम्मानित किया गया। द्वितीय श्यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंसश उद्घाटन गुजरात के तत्कालीन राज्यपाल आर. के. त्रिवेदी ने किया।

1984 में तृतीय यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंसश का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन राजस्थान के राज्यपाल ओ.पी. मेहरा ने किया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा इस वर्ष को श्ईयर ऑफ यूथश घोषित करने पर संस्था द्वारा श्भारत यूनिटी यूथ फेस्टिवल तथा युवा पदयात्राश का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी जैल सिंह द्वारा किया गया।1985 में संस्था का गोल्डन जुबली वर्ष मनाया गया। चौथे श्यूनिवर्सल पीस कॉन्फ्रेंसश का आयोजन किया गया। 88 देशों में श्मिलियन मिनट्स ऑफ पीसश कार्यक्रम की लॉचिंग की गई।1986 में संस्था को संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा श्पीस मैसेंजर अवार्डश प्रदान किया गया। संयुक्त राष्ट्र के सेक्रेटरी जनरल ने दादी जी को अवार्ड भेंट किया। प्रथम श्इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंसश का आयोजन आबू पर्वत में किया गया।

सन् 1987 में श्ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्डश नामक 2 साल के अन्तर्राष्ट्रीय प्रोजेक्ट की लॉचिंग की गई।जिसके अन्तर्गत 122 देशों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। श्ऑल इंडिया स्प्रिच्युल कॉन्फ्रेंसश का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन बद्रिकाश्रम के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी शांतानंद सरस्वती ने किया।1988

में अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस श्ग्लोबल कोऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्डश का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सी. राय ने किया। 'ऑल इंडिया मोरल अवेकनिंग यूथ केम्पेनश का आयोजन दिल्ली में किया गया जिसका उद्घाटन उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्रा ने किया।1989 में द्वितीय श्ग्लोबल को ऑपरेशन फॉर ए बेटर वर्ल्डश नामक अन्तर्राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी द्वारा किया गया।तृतीय श्इंटरनेशनल होलिस्टिक हेल्थ कॉन्फ्रेंसश का आयोजन बेलगाम में किया गया। श्ऑल इंडिया एन्वायरमेंट अवेयरनेस केम्पेनश का आयोजन किया गया।

लंदन में संस्था के ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस तथा आबू पर्वत में ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन सन् 1990 में किया गया। दादी जी यूरोप व दक्षिण–पूर्व एशिया के दौरे पर गईं जहाँ उन्होंने अनेक कार्यक्रमों को सम्बोधित किया।1991 में दादी जी रशिया के दौरे पर गई। दादी जी को मुम्बई के प्रियदर्शनी एकेडमी द्वारा प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर द्वारा दादी जी को डाक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया । येल्लापुर में हाईस्कूल की टीचर्स के लिए टीचर ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन किया गया और फिर 1992 श्इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन यूनिवर्सल हार्मनीश का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिह राव

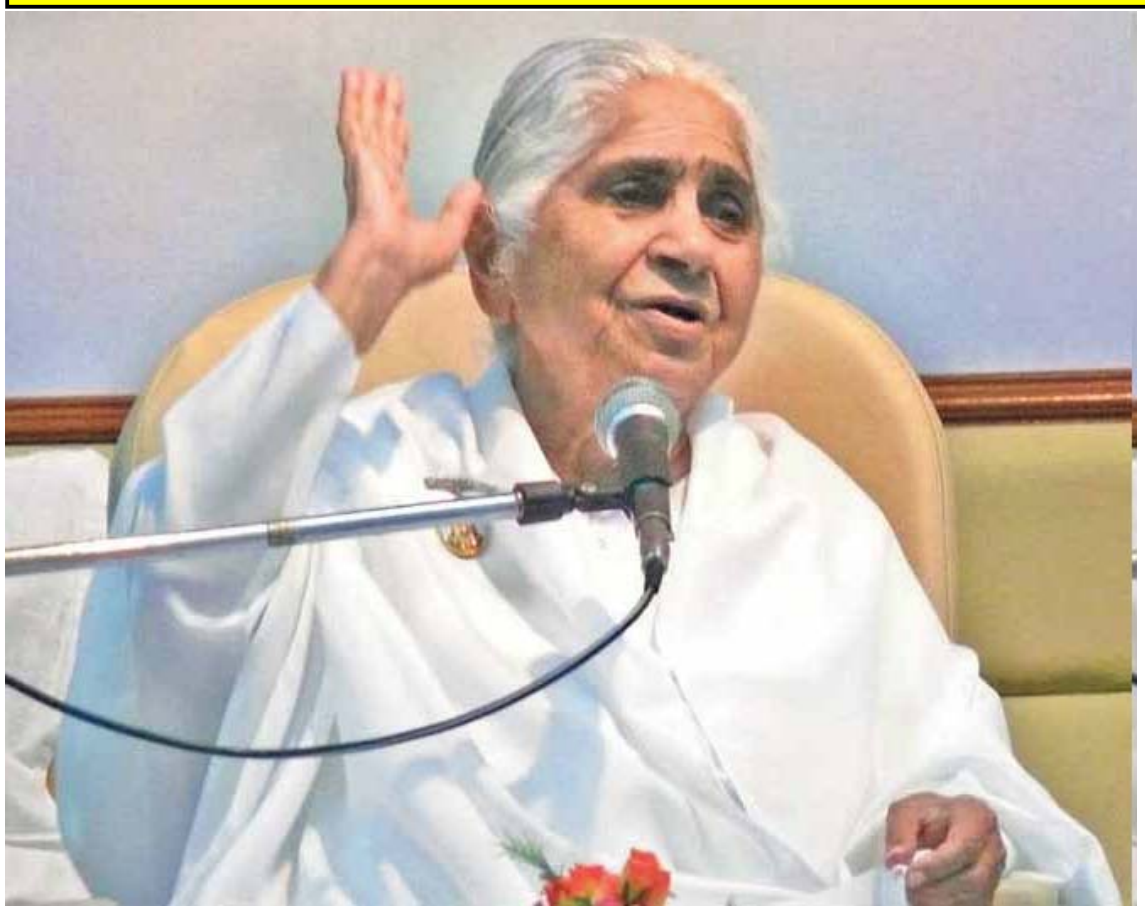

ने किया। युवा सद्भावना सायकल यात्रा का आयोजन भारत के 8 स्थानों से किया गया। 1994रू स्वास्थ्य मेलों का आयोजन पूरे भारत में किया गया।

दादी जी के कुशल मार्गदर्शन में सन् 1993 में इंडो–नेपाल हेल्थ अवेयरनेस केम्पेन का आयोजन किया गया।1996 में

दिल्ली से जमशेदपुर व दिल्ली से हैदराबाद तक नशामुक्ति अभियान निकाले गए। 1999–2000 रू भारत के 24 मुख्य शहरों से 24 ज्योतिर्लिंगम रथयात्राएं निकाली गईं। सभी रथयात्राओं का अंतिम पड़ाव आबू पर्वत था । इसका भव्य समापन आबू पर्वत में किया गया।1999 में श्इंटरनेशनल ईयर फॉर द कल्चर ऑफ पीस – मेनिफेस्टो 2000श कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरे भारत से 3 करोड़ लोगों से फार्म भरवाए गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने भी अपने फार्म भरकर इस अभियान में योगदान दिया।

सन् 2000 में पूरे भारत में विश्व बंधुत्व व सद्भावना की भावना को लेकर मेगा प्रोग्राम आयोजित किए गए।2001 से 2003 तक युवा एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संस्था के युवा प्रभाग ने भारत की सात राजधानियों में युवा महोत्सव आयोजित किए।

2004 में श्लीविंग स्प्रिच्युअलिटी फॉर ए वैल्यू बेस्ड सोसायटीश अभियान के अन्तर्गत पूरे भारत में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

2005 – 06 में श्शांति एवं शुभ भावनाश का अभियान चलाया गया।श्वर्ल्ड पीस फेस्टिवलश का आयोजन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2006 तक किया गया।2006 – 07 तक श्दिव्यता, आशा एवं खुशीश कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के हर शहर में कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत के जगद्गुरु, महामण्डलेश्वरों तथा संतजनों के लिए श्आध्यात्मिक कार्यक्रमश का आयोजन किया गया। पर्यावरण संकट पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

दादी जी ने अपने जीवन का हर पल संस्था को और मानव सेवा को समर्पित कर दिया और 1922 से फैला यह आलोक अंततोगत्वा 25 अगस्त 2007 को अपने पार्थिव देह का त्याग करते हुए पंचतत्व में विलीन हो गया।प्रत्येक वर्ष इस दिन को ब्रह्माकुमारिज़ इंटरनेशनल हाफ मैराथन के माध्यम से षविश्व बंधुत्व दिवसष के रूप में मनाती है।

निःसंदेह! ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो चले जाने के बाद भी दूसरों को प्रेरित करते रहते हैं। हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि जी ऐसे ही अमूल्य रत्नों में से एक हैं जो अपनी यादों के माध्यम से सदैव अमर रहेंगी। 1990 में लंदन में संस्था

के ग्लोबल कॉर्पोरेशन हाउस तथा आबू पर्वत में ग्लोबल हॉस्पिटल का उद्घाटन किया गया।दादी जी यूरोप व दक्षिण–पूर्व एशिया के दौरे पर गईं जहाँ उन्होंने अनेक कार्यक्रमों को सम्बोधित किया।1991 में दादी जी रशिया के दौरे पर गई। दादी जी को मुम्बई के प्रियदर्शनी एकेडमी द्वारा प्रियदर्शनी अवार्ड से सम्मानित किया गया। मोहनलाल सुखाड़िया वि.वि., उदयपुर द्वारा दादी जी को डाक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया।येल्लापुर में हाईस्कूल की टीचर्स के लिए टीचर ट्रेनिंग सेंटर का उद्घाटन किया गया।1992 में श्इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन यूनिवर्सल हार्मनीश का आयोजन आबू पर्वत में किया गया जिसका उद्घाटन भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिह राव ने किया। युवा सद्भावना सायकल यात्रा का आयोजन भारत के 8 स्थानों से किया गया।दादी जी के नेतृत्व में 1994 में स्वास्थ्य मेलों का आयोजन पूरे भारत में किया गया।

1996 में दिल्ली से जमशेदपुर व दिल्ली से हैदराबाद तक नशामुक्ति अभियान निकाले गए। 1999 से 2000 में भारत के 24 मुख्य शहरों से 24 ज्योतिर्लिंगम रथयात्राएं निकाली गईं। सभी रथयात्राओं का अंतिम पड़ाव आबू पर्वत था । इसका भव्य समापन आबू पर्वत में किया गया।1999 में श्इंटरनेशनल ईयर फॉर द कल्चर ऑफ पीस – मेनिफेस्टो 2000श कार्यक्रम के अन्तर्गत पूरे भारत से 3 करोड़ लोगों से फार्म भरवाए गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा मानव संसाधन मंत्री मुरली मनोहर जोशी ने भी अपने फार्म भरकर इस अभियान में योगदान दिया।सन् 2000 में पूरे भारत में विश्व बंधुत्व व सद्भावना की भावना को लेकर मेगा प्रोग्राम आयोजित किए गए।2001 से 2003 तक युवा एवं खेल मंत्रालय के सहयोग से संस्था के युवा प्रभाग ने भारत की सात राजधानियों में युवा महोत्सव आयोजित किए।

2004 में श्लीविंग स्प्रिच्युअलिटी फॉर ए वैल्यू बेस्ड सोसायटीश अभियान के अन्तर्गत पूरे भारत में कार्यक्रम आयोजित किए गए।2005 – 06 में तो श्शांति एवं शुभ भावनाश अभियान चलाया गया । श्वर्ल्ड पीस फेस्टिवलश का आयोजन दिल्ली के जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 27 अक्टूबर से 5 नवम्बर, 2006 तक किया गया।2006 – 07 में दादी जी के कुशल मार्गदर्शन में शदिव्यता, आशा एवं खुशीश कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत के हर शहर में कार्यक्रम आयोजित किए गए। भारत के जगद्गुरु, महामण्डलेश्वरों तथा संतजनों के लिए श्आध्यात्मिक कार्यक्रमश का आयोजन किया गया। पर्यावरण संकट पर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

1922 से सतत प्रवाहित दादी जी की यह यात्रा अंततोगत्वा 25 अगस्त 2007 को अपने पार्थिव देह के त्याग के साथ ही थम गई।प्रत्येक वर्ष इस दिन को ब्रह्माकुमारिज़ इंटरनेशनल हाफ मैराथन के माध्यम से षविश्व बंधुत्व दिवसष के रूप में मनाती है। निःसंदेह! ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो चले जाने के बाद भी दूसरों को प्रेरित करते रहते हैं।हमारी प्यारी दादी प्रकाशमणि ऐसे ही अमूल्य रत्नों में से एक हैं जो अपनी यादों के माध्यम से सदैव अमर रहेंगी।

मुलुंड शिवसेना द्वारा विरोध मार्च

मुंबई–बदलापुर के एक स्कूल के यौन उत्पीड़न के विरोध में मुलुंड शिवसेना शाखा 104 और 106 के माध्यम से जोरदार मार्च निकाला और विरोध किया. यह विरोध आंदोलन मुलुंड पश्चिम एम.जी. रोड से शुरू होकर मुलुंड पूर्व पर ख़त्म हुआ. इस रैली में आजीमाजी शिवसैनिक, पदाधिकारी ऑर बड़ी संख्या में महिला–पुरुष उपस्थित थे। आंदोलन का नेतृत्व शिवसेना पदाधिकारी सीताराम खांडेकर, दिनेश जाधव, उप प्रभागप्रमुख नितिन चवरे, वेंकटेश अय्यर और पूर्व उपविभाग प्रमुख सुनील गारे ने किया. इस समय आक्रोशित नागरिकों ने विरोध प्रदर्शन में भाग लिया और विकृत कृत्य का विरोध किया. सरकार से यह भी मांग की गई कि ऐसे रवैये वाले आरोपियों को जल्द से जल्द उचित और कड़ी सजा दी जानीचाहिए और मामला फास्ट ट्रैक कोर्ट में दायर किया जाना चाहिए।

नाबालिग लड़की पर इस्लाम अपनाने का दबाव डाल रहा था, फिरोज

OBC समाज की नाबालिग लड़की पर इस्लाम अपनाने का दबाव डाल रहा था, फिरोज, खेतों में गई तो पकड़ कर रेप की कोशिशः– कौशांबी पुलिस ने किया गिरफ्तार!

उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी जिले में 19 अगस्त को फिरोज खान

नाम के एक शख्स ने इस्लाम कबूल नहीं करने पर **OBC** समाज की एक नाबालिग हिन्दू लड़की से रेप किया। पीड़िता के परिजन जब इसकी शिकायत लेकर आरोपित के घर गए तो उसके अम्मी और अब्बा ने उन्हें गंदी–गंदी गालियाँ दीं और हत्या की धमकी दी। शिकायत के आधार पर पुलिस ने थ्प्ट दर्ज करके आरोपित को गिरफ्तार कर लिया है।

गरीबों को उजाड़ने का दुस्साहस करने वालों को सिखाएं सबक

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि गरीबों को उजाड़ने का दुस्साहस करने वाले माफिया, दबंग किसी भी सूरत में बख्शे न जाएं। कड़ी कानूनी कार्रवाई कर उन्हें सबक सिखाएं। गरीबों की जमीन तो बचाई ही जाएगी, साथ ही जिन भी जरूरतमंदों को अभी पक्का मकान नहीं मिल पाया है, उन्हें प्रधानमंत्री आवास योजना या मुख्यमंत्री आवास योजना के दायरे में लाकर पक्के आवास की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्यमंत्री ने मंगलवार को गोरखनाथ मंदिर में जनता दर्शन के दौरान लोगों की समस्याएं सुनने के बाद अधिकारियों को कार्रवाई के निर्देश दिए। उन्होंने करीब 300 लोगों से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनीं। महंत दिग्विजयनाथ स्मृति भवन सभागार में कुर्सियों पर बैठाए गए लोगों तक सीएम योगी खुद पहुंचे और समस्या सुनते हुए उनके प्रार्थना पत्र लिए।

चारों तरफ दोस्ती

गहरी हो रही है ।
फिर भी तनाव है ।
लगता है
दोस्ती नहीं
व्यापार है ।
मगर हमें
दोस्ती का इंतजार है ।
जो दुख दर्द समझे
आगे बढ़े
मानवता के दबाव में
निःस्वार्थ
निर्भीक भी।
जिसमें स्वार्थ का
पूरा पूरा
अभाव हो।
इंसानियत का लगाव हो।
शेष
शुभ यात्रा में
अगला पड़ाव हो
उत्तम बर्ताव हो ।
जय हिंद ।।

–अन्वेषी

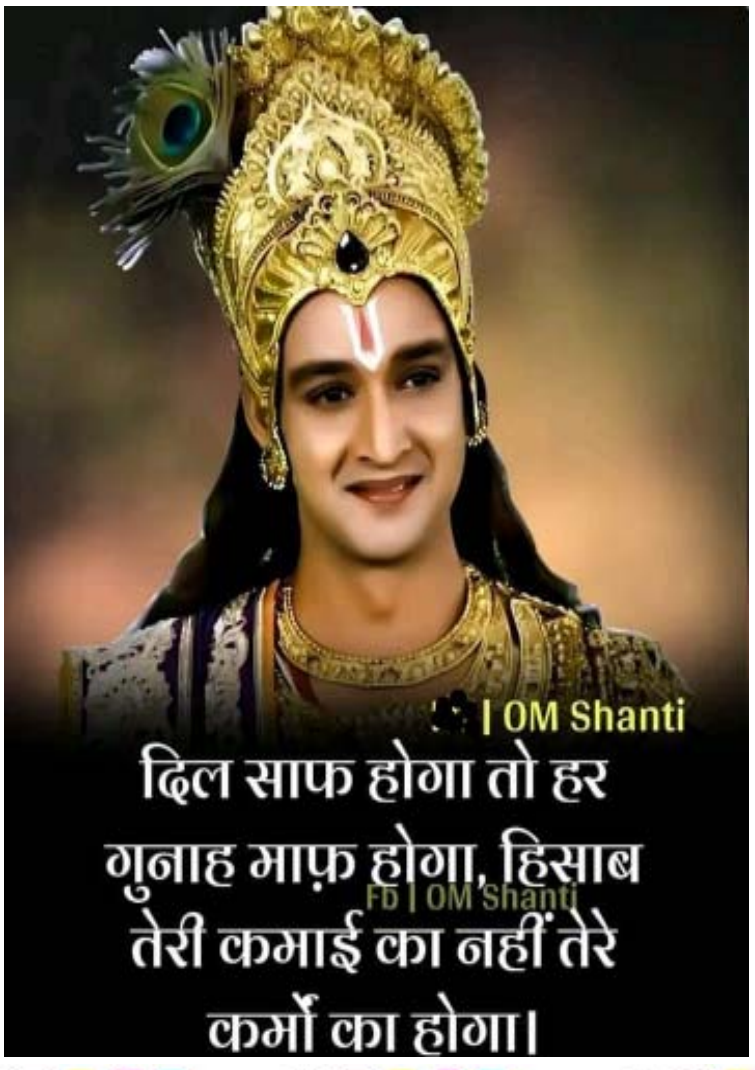

क्या आपने कभी देशभक्ति की कविता डमः छंद में पढ़ी है? या सुनी है?

(कुछ अलग हटकर हो तो आशीर्वाद तो बने है)

कर करतब तब हक पर फन कर,
पल–पल धरम–धरम अब मत कर।

मत कर कट–कट कपट न छल कर,
तन मन धन सब सपन दफन कर।

गरजन तरजन तज अब सहचर,
वतन जतन कर सकल मगन कर।

कर मत अनबन कर मत भन–भन,
वतन नमन कर,जन गण मन कर ।

–सुरेश मिश्र

देवगांव साधक परिवार द्वारा प्रत्येक रविवार को इसी प्रकार से प्रभात फेरी एवं भगवन्नाम संकीर्तन यात्रा निकाली जाती है। प्रभात फेरी की बड़ी भारी महिमा है, इसमे भगवन्नाम जप तथा संकीर्तन करने से वातावरण पवित्र एवं भक्तिमय हो जाता है।
वैज्ञानिक एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अत्यंत लाभदायक है, सुबह–सुबह शांत और प्रदूषण रहित वातावरण में पैदल चलने से शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न रहता है। अतः ऐसी प्रभात फेरियां अन्य स्थानों पर भी निकालनी चाहिए।

परम पूज्य संत श्री आशारामजी बापूके साधक समिति द्वारा श्रावण मास रविवार दिनांक 18 अगस्त को देवगांव मैहनाजपूर रोड , जिला आजमगढ़ उत्तर प्रदेश मे प्रभात फेरी निकाली गई

"सबसे खतरनाक 'वायरस' भय है जबकि, सबसे असरदार 'वेक्सिन' है विश्वास"!!

अब तक आपने क्या किया, शायद उससे कोई फ़र्क नहीं भी पड़े; लेकिन, इस बात से ज़रूर फ़र्क पड़ेगा कि, अब आप क्या कर रहे हो!!?

कहते हैं कि आपकी जीवन कहानी लिखने के लिए, स्याही वाली कलम काम ना भी आए लेकिन...

ध्यान रहे कि आपके **व्यवहार और कर्म की स्याही वाली कलम** "आपकी जीवन कहानी लिखने के लिए ज़रूर काम आती है"!!!

ओम शांति

स्टार क्रिकेटर युवराज सिंह पर बन रही है बायोपिक

मुंबई। पूर्व भारतीय क्रिकेटर और आईसीसी 2011 विश्व कप के हीरो युवराज सिंह पर बायोपिक बन रही है। अभी तक शीर्षक वाली यह फिल्म क्रिकेट में उनकी यात्रा और योगदान का एक भव्य जश्न मनाने का वादा करती है, जिसमें 2007 टी20 विश्व कप में 6 छक्कों की अविस्मरणीय लकीर और 2011 विश्व कप में उनका शानदार प्रदर्शन शामिल है, जिसके कारण भारत ने 28 साल बाद खिताब जीता था। 2000 में अपने अंतरराष्ट्रीय पदार्पण के बाद से, युवराज सिंह ने क्रिकेट पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने अपनी आक्रामक बाएं हाथ की बल्लेबाजी और शानदार फील्डिंग से प्रशंसकों का दिल जीत लिया। फिल्म के बारे में बात करते हुए युवराज ने कहा, मैं बेहद सम्मानित महसूस कर रहा हूं कि मेरी कहानी भूषण जी और रवि द्वारा दुनिया भर में मेरे लाखों प्रशंसकों को दिखाई जाएगी। सभी उतार–चढ़ाव के दौरान क्रिकेट मेरा सबसे बड़ा प्यार और ताकत का स्रोत रहा है। मुझे उम्मीद है कि यह फिल्म दूसरों को अपनी चुनौतियों से उबरने और अटूट जुनून के साथ अपने सपनों को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगी। अभी तक शीर्षक वाली इस फिल्म का निर्माण भूषण कुमार और रवि भागचंदका द्वारा किया गया है, जो सचिनरू ए बिलियन ड्रीम्स और सितारे ज़मीन पर के लिए जाने जाते हैं। क्रिकेटर की यात्रा उसकी क्रिकेट उपलब्धियों से आगे तक फैली हुई है। 2011 में, युवराज सिंह को कैंसर का पता चला था, लेकिन उन्होंने विश्व कप में अपने देश के लिए खेलना जारी रखा और अपने शानदार प्रदर्शन के लिए उन्हें टूर्नामेंट का खिलाड़ी घोषित किया गया।

ज्ञान सरोवर
(हिन्दी साप्ताहिक)

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक पूजा प्रसाद पाण्डेय द्वारा नवभारत प्रेस लि. नवभारत भवन, प्लाट नं.13, सेक्टर–8, सानपाड़ा (पूर्व) नवी मुम्बई 400706 (एम.एस.) से मुद्रित तथा 11 गोकुलेश सोसायटी, पंडित मदन मोहन मालवीय रोड, मुलुण्ड (प.) मुम्बई 400080 (एम.एस.) से प्रकाशित।

सम्पादक

पूजा प्रसाद पाण्डेय

मो0– 9833567799

R.N.I.No.MAHHIN/2009/27377

Email: editor@gyansarovar.org
www.gyansarovar.org

समाचार पत्र में प्रकाशित समाचारों/लेखों में लेखकों तथा संवाददाताओं के अपने विचार हैं। किसी भी लेख/समाचार की जिम्मेदारी प्रकाशक/सम्पादक की नहीं होगी। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय होगा।